रात्रिक्लास 9-1-68 ओमशान्ति शिव बाबा याद है?

बच्चे जानते हैं दुनिया में है ही भक्ति मार्ग। ज्ञान का सागर तो बाप ही है। वह है भक्ति रात। दिन है सतयुग। रात और दिन के बीच में बाप आकर ज्ञान देते हैं। तो तुम दिन में चले जाते हो। अभी तुम हो गुप्त। इनकागनिटो की शक्ति सेना। तुम लड़ाई के मैदान में हो। यह है भी गीता। गीता में ही राजयोग है। भगवानुवाच में तुमको राजाओं का राजा बनाता हूं। कृष्ण का नाम डालने से भारत कंगाल होगया है। फिर सच्ची गीता से तुम सिरताज बनते हो। तुम समझाते हो कृष्ण भगवान नहीं हैं। सारा मदार है गीता पर। वह है मनुष्यों की सुनाई हुई गीता। म्युजियम आदि में जब समझाते हैं तो यह सुनाना है। यह गीता का एपीसुड है। सिर्फ भगवान किसको कहा जाये यह भारतवासी नहीं जानते। कृष्ण भगवानुवाच कह सारी गीता खण्डन कर दी है। गीता पढ़ते2 राजाई थोड़े ही प्राप्त होती है। बाप विश्व में शान्ति स्थापन कर रहे हैं। विश्व में शान्ति हुई थी ना। इसमें प्युरटी जरूर चाहिए। इस पावित्रता की बात पक्का गड़ा होता है। पावित्रता बिगर कैरेक्टर्स सुधर नहीं सकती। वह पतित कहलाते वह पावन कहलाते। अभी सभी पतित हैं तो भारवासी में कैरेक्टर्स है नहीं। भ्रष्टाचारी हैं। पावन को श्रेष्ठाचारी कहा जाता है। भारत को ऐसा हम श्रेष्ठाचारी बना रहे हैं। इनके राज्य में ही वर्ल्ड पीस थी। सभी ब्रदर्स का बाप ही विश्व में शान्ति स्थापन करते हैं। बेहद के बाप की महिमा करने से खुश होंगे। वही ऊंच ते ऊंच भगवान है। भगवान कहते हैं मैं साधुओं का भी उधार करता हूं। तो पतित ठहरे ना। पावन बनाने वाला एक ही बाप है। किसको समझने की भी बुद्धि चाहिए। बहुत थोड़े हैं जो समझा सकते हैं। कहते हैं हम बोल नहीं सकते। हरेक की अपनी तकदीर है। कोशिश करनी चाहिए। बाप जो तुमको विश्व का मालिक बनाते हैं उनको तुम याद नहीं कर सकते हो। यह तुम्हारी तकदीर की बात है। मंजिल है ना। याद न रहने कारण पतित के पतित ही रह जाते हैं। याद की यात्रा में रह नहीं सकते। जो शान्ति रहते हैं वह बाप की याद में रहते होंगे। आगे चल तुमको कहेंगे मुखी में बात करो। आवाज बन्द। आवाज से भी बोलना न चाहिए। बहुत आहिस्ते बोलने में शान्ति रहती है। नहीं तो जैसे कि आपस में लड़ते हैं। सभी को अलफ आर बे बताना है। बेहद के बाप को याद करो तो पाप कट जाये। शिवजयन्ति भारत में ही होती है। शिव ने क्या आकर किया कुछ भी पता नहीं। कृष्ण तो नई दुनिया स्थापन कर न सके। कृष्ण ने थोड़ी ही नई दुनिया रची है। वह तो बाप रचते हैं। तो यह सभी बातें समझकर समझाना होता है। याद की यात्रा से जन्म-जन्मान्तर के विकर्मों को भस्म करना है। वह हिसाब तो चुकुंत कर दें। अभी तुम समझते हो हम आसुरी सम्प्र0 थे। अभी दैवी सम्प्रदाय बन रहे हैं। ओम। पायंदसः- सतगुरुवार को तुम बच्चों का रोज है। रोजबु तुमको ज्ञान का सागर पढ़ाते हैं। बृक्षपति भगवान को कहा जाता है। ज्ञान भी भगवान में है। वही सुखका सागर ज्ञान का सागर... है। सतयुग में है शान्ति। आपस में लड़ते झगड़ते ही रहते हैं। वह है ज्ञान का सागर। यह है अज्ञान का सागर। एकदो पर काम कटारी चलते रहते हैं। आधा कल्प है रामराज्य आधा कल्प है रावण राज्य। सुख और दुःख का खेल है। अभी बाप कहते हैं चलो सुखधाम। और पुरुषार्थ करके पद लो। यहां तुम आये हो नर से ना0 बनने परन्तु माया भी कम नहीं है। अच्छे2 महारथियों से माया ऐसी विकर्म कराती है जो बात मत पूछो। बाप से भी छिपाते हैं। बाप को न सुनाने से वह गिर सेण पर जाता है। चढ़ने बदली और ही गिर पड़ते हैं। दिल में समझते जरूर हैं हम देहअभिमान में आकर विकर्म कर बैठते हैं। बाबा कहते हैं खबरदार रहो। ऐसे मत समझो बाबा को पता नहीं पड़ता। बाबा को सभी मालूम पड़ जाता है। विवेक से काम लेते हैं। लड़ाई के मैदान में है ना। अच्छे2 कैप्टन कमान्डर भी मर जाते हैं। माया से धोखा खा लेते हैं। कहां2 चोट खा लेते। स्पताल जाने जाने लायक बनते है। माया बड़ी जबरदस्त है। लज्जा के मारे बहुत बाबा को लिखते नहीं। नहीं तो कायदा है जो भी पाप किये हैं वह लिखकर भेजे तो कम हो जायेगा। परन्तु सुनाते नहीं हैं। माया प्राप्त कराती ही रहती है। दिन अन्दर जरूर खाती होगी। परन्तु देहअभिमान है हम बहुत अच्छा समझते हैं। हम परिपूर्ण हैं। बाप तो सभी को समझावेंगे ना। मुरली में ही समझानी देते रहेंगे। बाप देखे न देखे परन्तु माया का थप्पर खाकर अवस्था खराब कर देते हैं। ओ।

39